।। श्री शांतिनाथ जिन पूजन ।।

रचियता – राजेश कासलीवाल, उज्जैन

स्थापना

(छंद रोला)

सम्यक रत्नत्रय धर भायी षोडश भावन ।
सर्व हितंकर पाया पद तीर्थंकर पावन ।
धर्म देशना धर्म चक्र का किया प्रवर्तन ।
हुआ अहो जयवंत जगत में श्री जिन शासन ।

(दोहा)

सर्व शांति दातार हो, प्रभुवर शांति जिनेश ।
मेरे मनमंदिर बसो, शेष रहे ना क्लेश ।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् परि पुष्पांजलि क्षिपेत।

(छंद विधाता)

स्वयं ही ज्ञानधारी पर, न निज को जान मैं पाया ।
परमसुख का पिटारा रे, दुखी संसार भरमाया ।
प्रभु यह मोह अब क्षय हो, जनम ना हो मरण देवा ।
अतः है नीर निर्मल से, शिरी शांति चरण सेवा ।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कषायिक भाव की भट्टी, अरे संताप मय ज्वाला ।
धधकता मैं प्रभु नित ही, जिसे तुमने बुझा डाला ।
अहो तुम शांत हिमद्रह हो, नही मैं एक कण देवा ।
मलय से है अतः प्रभुवर, शिरी शांति चरण सेवा ।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षणिक परभाव जो प्रभुवर, उन्हीं से जोड़कर नाता ।
मरण का ही प्रतिपल मैं, अरे अनुभव रहा पाता ।
तुम्ही अक्षय अविनाशी, तुम्हारी हूँ शरण देवा ।
करुँ मैं अक्षतों से नित, शिरी शांति चरण सेवा ।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

निजातम ब्रह्म में रमते, विषय की वासना तजकर ।
हुए निष्काम प्रभुवर तुम, अरे चैतन्य को भजकर ।
मैं पीड़ित हूँ पुहुपशर से, मदन का हो मरण देवा ।
अतः मैं पुष्प से करता, शिरी शांति चरण सेवा ।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

अनुभव आत्म अमिरस से, परम हो तृप्त तुम प्रभुवर ।
नहीं मैने तुम्हे जाना, न निज को भी अरे क्षणभर ।
क्षुधा लोकान्त से ज्यादा, न मिलता एक कण देवा ।
अतः नैवेद्य से करता, शिरी शांति चरण सेवा ।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु त्रैलोक्य दीपक हो, न जग में शेष है कोई ।
तुम्हारे ज्ञान से बाहर, नहीं पर ज्ञान में कोई ।
अरे हूँ ज्ञानमय मैं पर, न देखा एक क्षण देवा ।
अतः मैं दीप से करता, शिरी शांति चरण सेवा ।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

नहीं है पारिणामिक में, कोई दूषण न कर्कट रे ।
उसी की ध्यान वन्हि में, विकारी सब धधक जरे ।
प्रभु अब आप जैसी ही, हो शुद्धि का वरण देवा ।
अतः मैं धूप से करता, शिरी शांति चरण सेवा ।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

निजातम साधना का फल, है मुक्तिथल परम पाया ।
जगत सब छोड़कर जिनवर, बने हो तुम जगतराया ।
सभी निष्फल यतन कर मैं, आया तुम शरण देवा ।
करुँ मैं दिव्य फल से अब, शिरी शांति चरण सेवा ।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

निजातम का विभव प्रभुवर, परिणति में उतर आया ।
तुम्हें जो जानता जिनवर, वही क्षय मोह कर पाया ।
मैं तुम सम नाथ कर पाऊं, अमोलक पद वरण देवा ।
अतः मैं अर्घ्य से करता, शिरी शांति चरण सेवा ।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(धत्तानंद)

तीर्थंकर वंदें नित अभिनंदें, पद अरविंदे शीश धरें ।
पांचों कल्याणक समकित दायक, मोद बधायक भक्ति करें ।

पुष्पांजलि क्षिपेत्।

(छंद अवतार)

भादव की कृष्णा सात, तज सर्वार्थ प्रभो ।
आए उर एरा मात, सपनों बीच विभो ।
माता की करने सेव, सुरबाला आई ।
बहु रतन राशि धनदेव, नभ से बरसाई ।

ॐ ह्रीं भादवकृष्णासप्तम्यां गर्भमंगलमण्डिताय श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौदस वदि जेठ जुहार, जनमें जगतपति ।
पांडुक पर कलसे ढ़ार, नाचे स्वर्ग पति ।
नृप विश्वसेन के द्वार, बजत बधाई धुन ।
तिहुंलोक शांति की धार, पाए शुभ्र शगुन ।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां जन्ममंगलमण्डिताय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अनध्यंपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भवभोग असार विचार, मन वैराग्य लिए ।
वदि जेठ चतुर्दशी सार, अंतरमग्न हिए ।
षटखंड छोड़ रतिराज, संयम पथ लहते ।
तुम धन्य धन्य यतिराज, ब्रह्म ऋषि कहते ।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां तपोमंगलमण्डिताय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम पूर्ण निजातम लीन, जगत सकल झलके ।
सब कर्म घातिया क्षीण, ले गुण निज बल के ।
सित दशमी पौष महान, दिव्य समोसृत से ।
ओंकार धुनि बन ज्ञान, रे अमृत बरसे ।

ॐ ह्रीं पौषशुक्लदशम्यां ज्ञानमंगलमण्डिताय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुणथान चतुर्दश पार, चौदस ज्येष्ठ वदि ।
तन करम योग निरवार, तर गए भव उधदि ।
है शांत कुंदप्रभ तूप, शिखर सम्मेद अचल ।
समश्रेणी लोकान्त अनूप, शाश्वत मुक्ति थल ।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां मोक्षमंगलमण्डिताय श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

काम सकल निष्काम कर, चक्र कर्म कर चूर ।
तीर्थ भविक को तार कर, सिद्ध हुए शिव सूर ।

(छंद त्रोटक)

जय शांति जिनेश गुनेश गरिष्ठ, अरिष्ट विकार विनाश वरिष्ठ ।
जगत्त्रय वंदित नंदित देव, अखंडित मंडित मुक्ति स्वमेव ।
किये तुम कर्म गति अवरोध, लिया जब शुद्ध निजातम शोध ।
वरा तब संवर सम्यक भाव, विभाव विभाग धरा निजभाव ।

उपयोगी में उपयोग रहे, उपयोग नही क्रोधादि महे ।
क्रोधादिक क्रोधादिक में ही, उपयोग मांहि क्रोधादि नही ।
आधार नही आधेय नही, नही ज्ञान प्रतिष्ठित ज्ञेय कहीं ।
पर पर में निज में निज तिष्ठित, है भेदज्ञान विज्ञान प्रतिष्ठित ।

सोपान प्रथम शिवमग संवर, है पान प्रथम निजरस संवर ।
निजभाव प्रथम परिणति सुखमय, परभाव प्रथम निकसत दुखमय ।
रजकर्म प्रथम आश्रव रुकता, श्रद्धान प्रथम निजथल झुकता ।
शिवशर्म प्रथम आंशिक मिलता, निजधर्म प्रथम अंतर खिलता ।

शुद्धि में वृद्धि पल प्रतिपल, अविचल पद हित पुरुषार्थ प्रबल ।
रथधर्म बढ़े पथशिवपुर पर, रज कर्म झरे झर झर निर्जर ।
अविपाक सकाम विराम विषाद, विकार विवर्जन नंद निनाद ।
बढ़े गुणथान चले शिवथानक, पावकतप धर करम विनाशक ।

भरम प्रथम फिर करम नास, धर धरम सरम ले चरम वास ।
रे विमल निकल बल अतल धार, रस-अरस दरस निज ज्ञान सार ।
सब भाव अनंता काल अनंता, हे भगवंता हे गुणवंता ।
गुणथान चतुर्दश पार चतुर्दश, -शीश लोक पर रहो आपवश ।

(धत्तानंद)

तीर्थंकर प्रभुवर हितकर दुखहर, भवतर शिवकर सुहित विभो ।
तुमको नित ध्यावें तुम गुण गावें, शिवसुख पावें शीघ्र प्रभो ।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

अतुल शांतिमय आतमा, शांत हुए परिणाम ।
संवर निर्जर मार्ग से, पाया मोक्ष सुधाम ।

पुष्पांजलि क्षिपेत्।